International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-2 March-April-2023 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

वर्तमान समय में माध्यमिक विद्यालय स्तर की शिक्षा का संक्षिप्त मूल्यांकन

रिसर्च स्कॉलर कु. पूजा शर्मा
शोध पर्यवेक्षक डॉ देवेन्द्र लोढ़ा
लॉर्ड्स यूनिवर्सिटी अलवर राजस्थान

सार–

शिक्षा सप्रयोजन, सचेष्ट तथा अविरल गतिशील एक वह सामाजिक प्रक्रिया है जो हर पल, हर परिस्थिति में व्यक्ति के समस्त व प्रगतिशील विकास को अंजाम देती है। शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का बहुत महत्व है इसलिए इस स्तर के अध्ययनरत छात्र–छात्राओं में अभिरूचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्य का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा की तैयारी की आधारशिला है। यदि इसकी नींव कमजोर होगी तो उच्च शिक्षा का भवन कैसे बनेगा। माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण (यूनिवर्सलाइजेशन ऑफ सैकन्डरी एजुकेशन) की चुनौंती का सामना करने के लियें माध्यमिक शिक्षा की परिकल्पना में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता हैं माध्यमिक शिक्षा जो बहुसंख्यक नागरिकों के लिये शिक्षाक्रम में 'टर्मिनस' का कार्य करती है, को यथाशीघ्र सर्वसुलभ और समान रूप से सशक्त व गुणवत्तापरक बनाना व्यक्ति, समाज और देश के हित में है। अतः इसे हमारा राष्ट्रीय दायित्व समझते हुये इसके सार्वजनीकरण एवं गुणात्मकता हेतु हमें सार्थक प्रयास करना होगा। माध्यमिक शिक्षा का सार ऐसे विकसित मनुष्य का सृजन करना है, जो अपने पर्यावरण के साथ रचनात्मक अन्तःक्रिया में कुशल सिद्ध हो, लोगों के गहन अर्न्तमन में निहित सशं ोधनों और सम्माव्य शक्तियों को गतिशील, वैज्ञानिक और तर्कसंगत संगठन के माध्यम से जागृत करें, जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था (शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना है) और यह शिक्षा में गुणात्मकता से सम्भव है। अतः आवश्यकता है कि शिक्षा में गुणात्मकता का ध्यान देते हुये, माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का पुर्नगठन कर इसे सशक्त व अनुपयोगी बनाया जाए। जिससे इस अवस्था में प्रवेश करने वाले किशोर छात्र–छात्राऐं शिक्षणोपरान्त सुयोग्य नागरिक बनकर जीवन में प्रवेश करके समान व राष्ट्र की उन्नति कर सकें।

प्रस्तावनाः–

शिक्षा वह जननी है जो शिक्षा को जन्म देती है और निरन्तर गतिशील रहकर नव निर्मित शिक्षा का निर्माण करती रहती है और इस प्रकार जीवन पर्यन्त चलती रहती है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, चिन्तन एवं दृष्टिकोण अलग–अलग होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को अपने तरीके से स्पष्ट करने और परिभाषित करने का प्रयास करता है। कोई शिक्षा को सार्वभौमिक दृष्टिकोण से देखता है तो कोई एकांगी दृष्टिकोण से तो कोई आध्यात्मिक तथा विविध दार्शनिक सम्प्रदायों के रूप में शिक्षा की व्याख्या करते हैं तो अन्य लोग सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक आदि परिप्रेक्ष्य को महत्व देते है। व्यक्ति का सम्पूर्ण

जीवन ही उसका शिक्षा काल होता है। शिक्षा सप्रयोजन, सचेष्ट, अविरल गतिशील वह सामाजिक प्रक्रिया है जो हर पल, हर परिस्थिति में मानव के समरस, प्रगतिशील विकास को अंजाम देती है। प्राचीन काल में शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही सीमित था। छात्रों की आवश्यकतायें, परिस्थितियों, क्षमताओं, रूचियों का शिक्षा क्रिया में कोई स्थान नहीं था लेकिन शिक्षा में मनोविज्ञान सम्मिलित होने से बालकों को समझने तथा शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में अधिक प्रयास होने लगे इसलिए शिक्षा को हमेशा से ही राष्ट्र तथा समाज की प्रगति का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है क्योंकि शिक्षा व्यवस्था को प्रभावशाली बनाकर ही राष्ट्र को प्रगतिशील व विकासशील बनाये रखा जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में हमें यह याद रखना चाहिए कि जीवन का वृक्ष लोहे के ढाँचे से बिल्कुल भिन्न हैं। यदि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके निर्धनता को दूर करना चाहते है तो ललित कलाओं द्वारा मस्तिष्क की हीनता को भी दूर किया जाना चाहिए। केवल भौतिक दरिद्रता ही दुःख का कारण नहीं है। हमें समाज के हितों को ही नहीं, वरन् मानव हितों को भी सन्तुष्ट करना चाहिए। सौन्दर्यात्मक और आध्यात्मिक उत्कर्ष पूर्ण मानव के निर्माण में योग देता हैं। मानव के निर्माणकारी पहलू का विकास कला द्वारा होता है।

शिक्षा को मनुष्य और समाज दोनो का निर्माण करना चाहिए। भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की नींव शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। ग्रामीण एवं शहरी जीवन दो परस्पर विरोधी चित्रों को प्रस्तुत करता है। दोनों ही के अपने–अपने नकारात्मक एवं सकारात्मक पहलू है जो व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है कि वह ग्रामीण या शहरी किसी भी वातावरण के माहौल में रहते हुए नकारात्मक पहलू की परवाह किए बगैर उपलब्ध अवसरों का अधिक से अधिक लाभ कैसे उठाएं। शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी उपलब्धता ग्रामीण स्कूलों की चिन्ता का प्रमुख विषय हैं। क्योंकि गाँव हो या शहर दानों स्तर पर प्रारम्भिक वातावरण, अभिरूचि, कौशल, सीखने की क्षमता, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और विभिन्न सुविधाओं की पहुँच एक बड़ा अंतर है क्योंकि शिक्षा की दृष्टि से माध्यमिक स्तर की शिक्षा का बहुत महत्व है। इस स्तर पर बालक–बालिका के मानसिक विकास में तेजी से सोचने–समझने की शक्ति, अलग–अलग क्षेत्रों में अभिरूचि दिखाना और उसी प्रकार अपने लक्ष्य का निर्धारण करने लगना, जैसी प्रक्रिया की शुरूआत हो जाती है।

शिक्षा की गुणवत्ता को परिभाषित करना आसान नहीं है, सामान्य अर्थ में गुणवत्ता युक्त शिक्षा का व्यवहारिक अर्थ बच्चों द्वारा बौद्धिक, सज्ञं ानात्मक, भावात्मक एवं मनोदैहिक क्षेत्र की विभिन्न दक्षताओं को अर्जित करना है। यह वर्तमान की एक कड़वी सच्चाई है कि सरकारी विद्यालय अपने लगभग 59 प्रतिशत छात्रों को प्राथमिक स्तर पर प्रवेश देते हैं, जिसमें से 35 प्रतिशत छात्र माध्यमिक शिक्षा तक पहुंच पाते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत गठित किये गये डाटा इन्फॉर्मेशन फोर एजुकेशन के अनुसार सिर्फ उच्च प्रवेश संख्या नौवी कक्षा तक छात्रों को कायम करने के बारे में ही सकारात्मक बात होती है।

शिक्षा समाज का प्रेरक बल है और शिक्षक उसकी प्रेरणा। शिक्षा ही मावनीय और नैतिक मूल्यों की स्थापना का सशक्त माध्यम है। मा0 शिक्षा तकनीकी के साथ नैतिकता कौशल और रोजगार को बढावा देने वाली होनी चाहिये। आज माध्यमिक शिक्षा में अत्यधिक कमियां हैं, जो उसकी गुणवत्ता को प्रभावित करती है। इसलिये माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को कायम रखने के लिये अभी भी वास्तविकताओं का अध्ययन करने, फिर उसके अनुसार नीति निर्माण और मोनीटरिंग करने वाले संस्थाओं का निर्माण किया जायें। माध्यमिक

शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह प्राथमिक व उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। प्रथमिक शिक्षा सहभागिता, बुनियादी अभावों से मुक्ति के मूल कारक के रूप में कार्य करती है, जबकि माध्यमिक शिक्षा आर्थिक विकास तथा सामाजिक न्याय की स्थापना को सुविधाजनक बनाती है।

साहित्य सर्वेक्षण–

भोजकर एवं मेहता (2007) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का व्यावसायिक रूचि का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी लड़के एवं लड़कियों ने वाह्य प्रयोगात्मक और सामाजिक सेवा को वरीयता दी। कला की छात्राओं की तुलना में विज्ञान की छात्राओं ने समाज सेवा में विशेष रूचि ली। व्यावसायिक रूचि में कला एवं विज्ञान के क्षेत्रों में अन्तर पाया गया।

सुब्रह्मण्यम पी0आर0 (2009) ने शारीरिक शिक्षा में अधिगम एवं व्यस्तता पर रूचि का अभिप्रेरणा प्रभाव का अध्ययन किया। इस समीक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों की व्यस्तता और अधिक पर रूचि की शक्ति को उजागर करना है। सामान्य शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा में रूचि आधारित अनुसंधान से स्पष्ट है कि पारिस्थितिक रूचि से बच्चों में व्यक्तिगत रूचि और भविष्यगामी इच्छा जागृत होती है।

सिंह, ज्ञान (2021) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं के वैज्ञानिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि माध्यमिक सतर के हिन्दी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक रूप में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सरोज, प्यारे लाल (2017) ने जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् दात्र–छात्राओं के विज्ञान विषय के प्रति रूचि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में विज्ञान विशय के प्रति रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात दोनों में समानता पाय गयी लेकिन शहरी छात्रों में विज्ञान विषय के प्रति रूचि ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च पायी गयी।

उद्देश्यः–

वर्तमान में नीति गुणवत्तापरक माध्यमिक शिक्षा 14–18 की आयुवर्ग के सभी युवाओं को उपलब्ध कराने, सुलभ करने और उनके सामर्थ्य को विकसित किये जाने की है। इसमें निम्न उद्देश्य है–

- माध्यमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं में तार्किक क्षमता विकसित करना।
- विद्यालयों में विश्लेषणात्मक शैली में पढ़ना, लिखना, सिखाना।
- माध्यमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं को आई0सी0टी0 व वांछिंत तकनीक का विशेष ज्ञान प्रदान करना।
- छात्र/छात्राओं में पारस्परिक संवाद व विचारों के आदान प्रदान की उत्कृष्ट क्षमता विकसित करना।
- माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की विशेष योजनाऐं चलाना।
- आवास से 5 किमी के भीतर मा0 शिक्षा प्रदान करने के लिये मौजूदा मा0 स्कूलों में अतिरिक्त श्रेणियां खोलना।
- वर्तमान माध्यमिक स्कूलों का सशक्तिकरण तथा उचित मात्रा में विषय अध्यापको की नियुक्ति।
- माध्यमिक शिक्षा का स्तर सुधारना जिसमें परिणामस्वरूप बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सीख बढ़े।

- यह सुनिश्चित करना की माध्यमिक शिक्षा ले रहे सभी छात्रों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले।
- यह ध्यान देना कि बालक लिंग, सामाजिक, आर्थिक असमर्थता या अन्य रुकावटों की वजह से गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा से वंचित ना रहे।

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता मे कमी के कारणः–

- विद्यालयों में भौतिक व मानवीय संसाधनों का आभाव 30 प्रतिशत
- शैक्षणिक योजनाओँ का वास्तविक रुप में लाभ ना मिलना 30 प्रतिशत
- विषय वस्तु का उत्कृष्ट ना होना 20 प्रतिशत
- वांछित तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में सही प्रयोग ना होना 20 प्रतिशत

कुल योग 100 प्रतिशत

मा0 शिक्षा की गुणवत्ता हेतु निम्न चुनौतियों पर ध्यान देना होगा

- सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण एन0सी0ई0आर0टी0 2002 के अनुसार माध्यमिक शिक्षा में छात्रो का सफल नामांकन 43–82 प्रतिशत था, जबकि प्रथमिक शिक्षा में सफल अनुपात नामांकन 93–32 प्रतिशत था अर्थात 56 प्रतिशत छात्र माध्यमिक शिक्षा से वंचित हैं।
- कोठारी आयोग 1964–66 ने सुझाव दिया था कि शिक्षा पर आवंटन का 2/3 विद्यालयी शिक्षा एवं 1/3 उच्च शिक्षा पर खर्च किया जाना चाहिये, परन्तु आज शिक्षा पर आवंटित प्रावधान के अर्न्तगत 50 प्रतिशत सर्वाधिक प्राथमिक शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है।
- माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक परीक्षा प्रणाली, शिक्षक–छात्र अन्तक्रिया आदि सम्बन्धित कमियों का उल्लेख किया है, इन्हे दूर किया जाना चाहिये।
- माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण प्रणाली 'चॉक एण्ड टॉक' विधि तक सीमित ना हो, अध्यापन कार्य केवल व्यवस्था विधि पर आधारित ना हो।
- माध्यमिक शिक्षा में सृजनात्मकता व जिज्ञासा का पूर्ण अभाव है।
- माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में प्रचलित शिक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन सिर्फ छात्रों के संज्ञानात्मक विकास तक सीमित है। भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष पूर्णतः उपेक्षित है। जिसमें छात्रों की निर्णय शक्ति, तर्क शक्ति, चिंतन शक्ति, कल्पना शक्ति एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन का अभाव दिखाई देता है।
- मा0 स्तर पर प्रचलित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया केवल स्मृति स्तर के शिक्षण तक सीमित है, जो रटने पर बल देती है। इसमें अवबोध, परावर्तन, संश्लेषण विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है।

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार के आयामः–

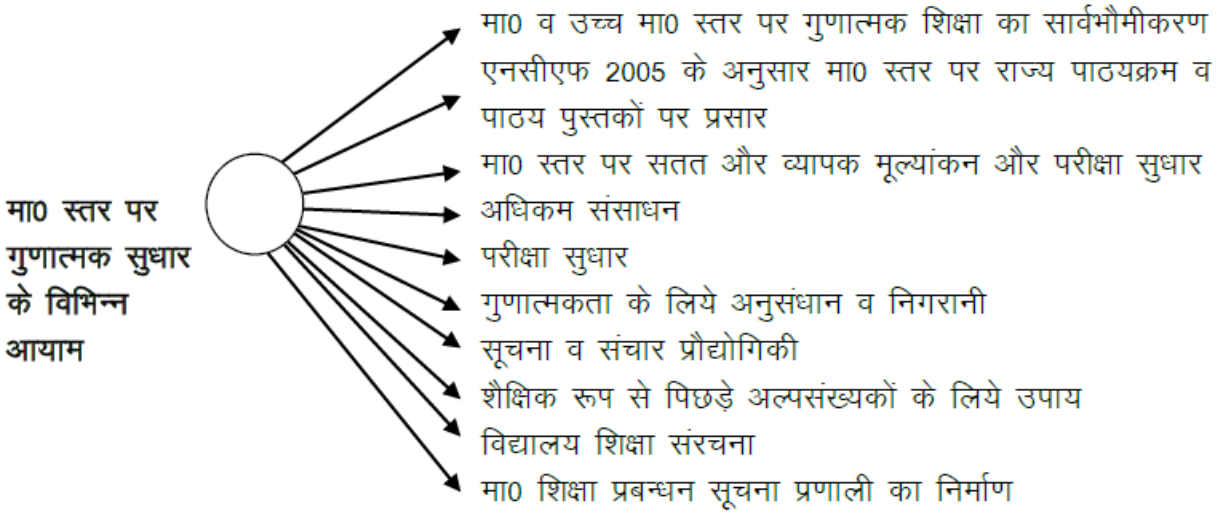

वर्तमान स्थिति में हमारे देश व प्रदेश में निरन्तर बढ़ती हुई आबादी और प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के परिणामस्वरुप मा0 स्तर पर छात्र/छात्राओं की संख्या में विगत वर्षों में भारी वृद्धि हुई है। आजादी के समय उत्तर प्रदेश में कुछ मा0 बालक–बालिका विद्यालयों की संख्या मात्र 506 थी तथा पढने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या 220 लाख हुआ करती थी, जबकि 12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्त में माध्यमिक स्तर पर नामांकन स्थिति और विद्यालयो व शिक्षको की संख्या निम्नवत थी:–

आजादी के समय

1	मा0 स्तर के बालक–बालिका विद्यालयों की संख्या	506
2	पढने वाले छात्र/छात्राओ की संख्या	2.20 लाख

12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्त में मा0 विद्यालयों की संख्या व नामांकन

1	नामांकन		
	कक्षा (9–10)	–	68.97 लाख
	कक्षा (11–12)	–	39.47 लाख
2	विद्यालयों की संख्या		
	सरकारी और अनुदानित	–	6,119
	गैर अनुदानित	–	13,730
3	शिक्षको की संख्या		
	सरकारी और अनुमानित विद्यालयों में	–	1,14,872

माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु कुछ समाधान

वर्तमान समय में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा मा0 शिक्षा व उच्च माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता के लिये कदम उठाये जा रहे हैं–

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु सर्वव्यापीकरण एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की अनुप्रयोगात्मक उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता इसकी गुणवत्ता हेतु कुछ समाधान निम्न हैं:–

- शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बालक व बालिका महत्वपूर्ण है। उनका शैक्षणिक विकास उनकी अभिरुचि एवं क्षमता योग्यता के अनुरुप किया जाना चाहिए।
- प्राथमिक स्तर पर ही विषयवस्तु को महत्व दिया जाना चाहिये। ताकि पाठ्यक्रम हस्तान्तरण में निर्देशात्मक, अनुदेशात्मक शैली का स्थान सृजानात्मक शैली ले सके। जहाँ बच्चे स्वयं नये ज्ञान का सृजन कर सके।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को स्मृति के स्तर से अवबोध स्तर में शिक्षण की तरफ उन्मुख किया जाये।
- माध्यमिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति को सिर्फ 'चॉक एण्ड टॉक' से सूचना व संचार तकनीक (ई–एजुकेशन, टीचिंग एवं लर्निंग) की तरफ प्रतिमान परिवर्तन किया जाये।
- माध्यमिक शिक्षा को सिर्फ सूचनात्मक सैद्धान्तिक एवं संज्ञानात्मक न बनकर इसे भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के समन्वित विकास हेतु प्रोत्साहित किया जायें।
- माध्यमिक विद्यालयों में ट्यूशन और कोचिंग को पूर्णतः प्रतिबन्धित कर शिक्षक छात्रों में कक्षा शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं कार्य संस्कृति विकसित की जाए।
- माध्यमिक विद्यालयों की परीक्षा पद्धति में परिवर्तन करके 25–40 प्रतिशत लघु उत्तरीय व शेष बहुविकल्पीय प्रश्नों में समाहित कर छात्रों के तनाव को कम किया जाये।
- भाषा शिक्षण में परस्पर संवाद को महत्व दिया जाये। ताकि शिक्षण के प्रारम्भिक सोपान में ही पढने लिखने का कौशल विकसित हो सकें।
- माध्यमिक शिक्षा के लिये धन का आवंटन प्रथमिक शिक्षा की भाँति सुनिश्चित किया जाये, क्योकि सर्वशिक्षा अभियान भी माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता से प्रत्यक्षत सम्बन्धित है।

शिक्षा नीतियों की सिफारिशो का आधार पर शिक्षा की गुणवत्ता बढाने हेतु भारत सरकार ने अलग–अलग समय पर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाऐं प्राप्त की है तथा उक्त योजनाओं के माध्यम से केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों द्वारा माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बढाने की आरे ध्यान दिया जा रहा है।

निष्कर्ष–

माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं की शिक्षा का दायित्व शिक्षक पर तो रहता है परन्तु अभिभावक एवं उनके आस–पास के वातावरण समाज का प्रभाव भी बालक–बालिका पर पड़ता है। बालक–बालिका की उन्नति सफलता कुछ कारण जैसे–पाठ्यक्रम, अभिरूचि, लक्ष्य, क्षमता योग्यता आदि पर निर्भर करती है। इस स्तर पर बालक–बालिका को सही दिशा–निर्देश प्रदान करने के लिए उनके सही मूल्यों का विकास होना अति आवश्यक है क्योंकि आज का विद्यार्थी ही कल समाज का योग्य नागरिक बनता है। शैक्षिक दृष्टि से बालक–बलिका की अभिरूचि को पहचान कर ही दिशा–निर्देश देकर, उचित वातावरण, उचित पाठ्यक्रम,

सुविधाएं पर्याप्त अवसर प्रदान कर एवं अभिप्रेरित कर उनके सर्वोत्तम विकास का मार्ग प्रशस्त करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिससे उनके सही मूल्यों का विकास हो सके और अपने निर्धारित लक्ष्य एवं उत्तम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अग्रसर रहें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:–

- पूनम मदान एवं रामशक्ल पाण्डेय (2018), समसामयिक भारत और शिक्षा सी0एन0 राव (के0 वेंकट सुब्रमन्यम) – एक लेख सज्जा।
- किरण शर्मा (2020), माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने की आवश्यकता, आई0जे0सी0आर0टी0, वाल्यूम–8, इश्यू–4।
- आस्थाना, विपिन (2021), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
- भटनागर, ए0बी0 भटनागर, मिनाक्षी, अनुराग, (2003), एजुकेशनल साइकोलॉजी, आर0 लाल बुक डिपो।
- गुप्ता, एस0पी0, गुप्ता, अलका (2007), सांख्यिकीय विधियाँ, पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- गुड, सी0वी0 (1953), इण्ट्रोड्क्शन ऑफ एजूकेशन रिसर्च, सेकेण्ड एडीशन, एपलेट ऑन सेन्चुरी क्राफ्ट इन्स, न्यूयार्क।
- कपिल, एच0के0 (1982), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- माथुर, एस0एस0 (2009), शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
- नायडु, पी0एस0 (1992), शैक्षिक अनुसंधान के मूलतत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- पाण्डेय, के0पी0 (2005), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- अरूण कुमार सिंह (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना।
- गुप्ता, एस0पी0 (2006), सांख्यिकीय विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- राय पारसनाथ (2004), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, प्रकाशन।
- सिंह अरूण कुमार (2001) ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां'' चतुर्थ संस्करण, मोती लाल नगर बनारसी दास, दिल्ली।
- मंगल, एस0के0 एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005), विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायक बुक डिपो।
- दबे शैली (2007), ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रति अभिवृत्त एवं अभिरूचि का अध्ययन'' एम0एम0 लघु शोध, राजस्थान।